

Padma Shri



Ms. K. V. RABIYA

Ms. K. V. Rabiya is a physically challenged social activist hailing from Tirurangadi, in Malappuram District of Kerala. She rose to prominence through her amazing role in the Kerala State Literacy Campaign in 1990. She also initiated a volunteer organisation, Chalanam(Motion), for the physically disabled and for mentally retarded children and run six schools for them. She continues to serve as its President amidst serious health problems.

2. Born on 25th February, 1966 in Vellilakkadu, in remote rural suburb on the banks of Kadalundi river in Tirurangadi. Though Ms. Rabiya had some health issues since childhood, Rabiya could reach her Tenth grade at Tirurangadi High School because of her strong determination. She attended the school classes by making pillion riding on her uncle's bicycle. After completing her pre degree at PSMO College, Tirurangadi, Ms. Rabiya couldn't continue her formal education. But wheelchair laden girl was not ready to yield. Along with managing all personal needs by her own, she became an ardent reader. She started her social intervention by giving tuition to the children in the vicinity.

3. In 1990, when Kerala Government started the literacy mission, Ms. Rabiya became active in it. In June 1992, state authorities visited her classroom and were surprised to see the impact of her work. Upon her requests to improve the basic infrastructure at her village, the authorities sanctioned roads, electricity, telephone and water connection. The one-and-a-half km road was aptly named Akshara (Word) Road. In 1993, she started a volunteer organisation, Chalanam for rehabilitation of physically disabled and mentally retarded children. It promotes health awareness, continuing education programmes and training for women. It also established small-scale manufacturing unit for women, a women's library and a youth club. She was involved herself in the "Akshaya: Bridging the Digital Divide" project that made 'Malappuram the first E-Literate district in India.

4. Ms. Rabiya's life is a testimony to the success of uncompromising human will against tragic mishaps. She was diagnosed with cancer when she was 32. When she was 34, she accidentally slipped in bathroom and damaged a few spinal nerves which almost dumped her into an inactive phase of life for years. During those bedridden days she wrote a book named 'Ente Mauna Nombarangal' [My silent grievances]. She later wrote an autobiography named 'Swapnangalkku Chirakukalund' [Dreams have wings]. The Kerala Govt. has included a part of her autobiography in the fifth standard Malayalam text book.

5. Ms. Rabiya's first national recognition came in 1994 with the National Youth Award from the Ministry of Human Resource Development of the Government of India. Ms. Rabiya received several Awards and Honour from Government of India, State Government and other organizations viz. National Youth Award, Kannaki Stree Shakti Award etc.

पद्म श्री



सुश्री के. वी. राबिया

सुश्री के. वी. राबिया केरल के मलप्पुरम जिले के तिरुरंगाडी में रहने वाली एक दिव्यांग सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वे 1990 में केरल राज्य साक्षरता अभियान में अपनी अद्भुत भूमिका के कारण प्रसिद्ध हुईं। उन्होंने दिव्यांग और मानसिक रूप से अक्षम बच्चों के लिए एक स्वयंसेवी संगठन, चलनम (मोशन) भी शुरू किया और उनके लिए छह स्कूल चलाए। उन्होंने गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं के बीच इसके अध्यक्ष के रूप में कार्य करना जारी रखा हुआ है।

2. 25 फरवरी, 1966 को तिरुरंगाडी में कदलुंडी नदी के तट पर सुदूर ग्रामीण उपनगर वेल्लिलाक्कुडु में सुश्री राबिया का जन्म हुआ। हालाँकि उन्हें बचपन से ही कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ थीं, लेकिन राबिया अपने दृढ़ निश्चय के कारण तिरुरंगाडी हाई स्कूल में दसवीं कक्षा तक पहुँच सकीं। वे अपने चाचा की साइकिल पर पिलीयन राइडिंग करते हुए स्कूल की कक्षाओं में जाती थी। पीएसएमओ कॉलेज, तिरुरंगाडी में अपनी प्री-डिग्री पूरी करने के बाद, सुश्री राबिया अपनी औपचारिक शिक्षा जारी नहीं रख सकीं। लेकिन व्हीलचेयर पर निर्भर लड़की झुकने को तैयार नहीं थी। सभी व्यक्तिगत जरूरतों को अपने दम पर पूरा करने के साथ-साथ ये एक उत्साही पाठक बन गईं। उन्होंने अपने सामाजिक क्षेत्र में कार्यों की शुरुआत आसपास के बच्चों को ट्यूशन देकर की।

3. वर्ष 1990 में जब केरल सरकार ने साक्षरता मिशन शुरू किया तो सुश्री उसमें सक्रिय हो गईं। जून 1992 में, राज्य के अधिकारियों ने उनकी कक्षा का दौरा किया और उनके काम के प्रभाव को देखकर दंग रह गए। उनके गांव में बुनियादी ढांचे में सुधार के अनुरोध पर, अधिकारियों ने सड़क, बिजली, टेलीफोन और पानी के कनेक्शन को मंजूरी दे दी। डेढ़ किलोमीटर की सड़क को अक्षरा (शब्द) रोड नाम दिया गया था। वर्ष 1993 में, उन्होंने दिव्यांग और मानसिक रूप से अक्षम बच्चों के पुनर्वास के लिए एक स्वयंसेवी संगठन, चलनम शुरू किया। वह महिलाओं के लिए स्वास्थ्य जागरूकता, सतत शिक्षा कार्यक्रम और प्रशिक्षण को बढ़ावा देता है। उन्होंने महिलाओं के लिए लघु-स्तरीय निर्माण इकाई, एक महिला पुस्तकालय और एक युवा क्लब भी स्थापित किया। वे खुद "अक्षय: ब्रिजिंग द डिजिटल डिवाइड" परियोजना में शामिल थीं, जिसने 'मलप्पुरम' को भारत का पहला ई-साक्षर जिला बनाया।

4. सुश्री राबिया का जीवन दुखद हादसों के प्रति समझौता न करने वाली मानवीय इच्छाशक्ति की सफलता का प्रमाण है। जब वे 32 वर्ष की थीं, तब उन्हें कैंसर का पता चला था। जब वे 34 वर्ष की थीं, तो वे गलती से बाथरूम में फिसल गईं और जिसने उनकी कुछ रीढ़ की हड्डी के हिस्से को क्षतिग्रस्त कर दिया, जिसने उन्हें लगभग वर्षों तक जीवन के निष्क्रिय चरण में रख दिया। उन बिस्तर पर पड़े दिनों के दौरान इन्होंने एंते मौना नोम्बरंगल' (मेरी मूक शिकायतें) नामक एक पुस्तक लिखी। बाद में उन्होंने 'स्वपनंगलक्कुचिराकुलुंड' (ड्रीम्स हैंव विंग्स) नामक एक आत्मकथा लिखी। केरल सरकार ने पांचवीं कक्षा की मलयालम पाठ्य पुस्तक में उनकी आत्मकथा का एक भाग शामिल किया है।

5. सुश्री राबिया को पहली राष्ट्रीय पहचान 1994 में भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (भारत सरकार) के राष्ट्रीय युवा पुरस्कार से मिली। भारत सरकार, राज्य सरकारों और अन्य संस्थाओं से सुश्री राबिया को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए जैसे राष्ट्रीय युवा पुरस्कार, 'कन्नकी स्त्री शक्ति पुरस्कार' इत्यादि।